Loan/given to Bombay Burmah Trading Corporation Limited by UTI and Commercial Banks

1668. SHRI BIR BHADRA PRATAP SINGH:

SHRI RAJUBHAI A. PARMAR:

Will the Minister of FINANCE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Bombay Burmah Trading Corporation Limited an associate company of Bombay Dyeing obtained a loan of Rs. 3 crores in 1985-86, Rs. 1 crore from Unit Trust of India and Rs. 2 crores from commercial banks;

(b) if so, whether it is a fact that the same loan was passed on to another subsidiary company known as Kachhaldara Trading Limited;

(c) if so, what are the details of the use made of the loan amount which was passed on to Kachhaldara Trading Limited from Bombay Burmah Trading Corporation; and

(d) whether it is legitimate to use loan for a purpose other than for which it is raised?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF ECONOMIC AFFAIRS IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI EDUARDO FALEIRO): (a) to (d) The information is being collected and will be laid on the Table of the House.

आयकर की वसूली

1669. **श्री शरद यादव** : क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार ने 1984 से आयकर के माध्यम से प्रतिवर्ष कितना-कितना धन वसूल करने का लक्ष्य रखा था ;

(ख) क्या यह सच है कि सरकार इस लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रही है ;

(ग) क्या सरकार ने रुपयों में आयकर की चोरी की मात्रा का पता लगाने के लए कोई सर्वेक्षण कराया है ; और

(घ) यदि हां, तो यह अनुमानित राशि कितनी है तथा सरकार ने इसकी वसूली के लिए क्या-क्या कदम उठाये हैं ?

वित्त मंत्रालय में राजस्व विभाग में राज्य मंत्री (श्री अजीत पांजा) :(क) और (ख) :

(करोड़ रुपयों में)

वित्तीय वर्ष	बजट अनुमानों के रूप में निर्धारित लक्ष्य	वास्तविक वसूलियां
1984–85	4314.00	4483.66
1985–86	4816.00	5374.30
1986–87	5711.00	6038.01
1987–88	6382.00	6644.00

(अनन्तिम)

उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चल सकता है कि वास्तविक वसूलियां सभी चार वर्षों के बजट अनुमानों से अधिक हैं ।

(ग) और (घ) देश में परिचालन में काले धन के कोई अधिकृत अनुमान उपलब्ध नहीं हैं । तथापि, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अनुरोध पर, राष्ट्रीय सार्वजनिक वित्त और नीति संस्थान ने भारत में काले धन की अर्थव्यवस्था के कुछेक पहलुओं का अध्ययन किया था । मार्च, 1985 में प्रकाशित "ऐसपेक्ट आफ दि ब्लैक इकानामी इन इंडिया" नामक अपनी रिपोर्ट में, उन्होंने वर्ष 1983–84 के लिए काले धन की राशि 31,584 करोड़ रुपए से 36,786 करोड़ रुपए के बीच आंकी थी । तथापि, लेखकों ने यह स्वीकार किया कि उनके द्वारा लगाए अनुमान बहुत से पूर्वानुमानों और मोटे अनुमानों पर आधारित हैं और प्रत्येक को चुनौती दी जा सकती है ।